डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव का अंतिम दिन रहा बच्चों एवं ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के नाम
सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं – ट्रांसजेंडर कवियों की पीड़ा
भारत में प्रकाशन की स्थिति पर हुई चर्चा
राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गाँधी' का भी हुआ समापन

नई दिल्ली, 2 फ़रवरी 2019। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे **साहित्योत्सव** का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों एवं ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के नाम रहा। बच्चों के लिए आज विभिन्न बाल गतिविधियों के अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने का सत्र, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियाँ सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए।

बच्चों के लिए कहानी और कविता प्रतियोगिता जूनियर और सीनियर वर्गों में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए 300 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। प्रत्येक वर्ग में हिंदी एवं अंग्रेज़ी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तथा दो सांत्वना पुरस्कार दिए गए। कुछ दिव्यांग बच्चों ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया। बच्चों को कार्टून बनाने का सत्र प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर ने किया तथा प्रख्यात बाल लेखक दिविक रमेश और रजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। ज़ैबुन्निसा 'हया' ने बच्चों को एक बालकथा सुनाई।

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन का आयोजन दिल्ली में पहली बार आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे काफी लंबे समय ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज देने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने ट्रांसजेंडर कवियों को मंच प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए स्मरणीय है और इससे हम सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे। इस अवसर पर 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविता प्रस्तुत कीं। ये ट्रांसजेंडर कवि पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से आए हुए थे। इनमें से कुछ प्रोफ़ेसर, अध्यापक, सिविल इंजीनियर आदि तक थे। सभी ट्रांसजेंडर कवियों की कविताओं में एक ही मुख्य दर्द था और वो था अपनी पहचान को लेकर। सभी ने कहा वे पैदा तो मर्द के रूप में होते हैं लेकिन उनका मन स्त्री का होता है। सभी के मन में उनके घरवालों द्वारा उनकी उपेक्षा करना तथा समाज द्वारा उन्हें स्वीकार ना करने का दर्द था। सभी ने कहा कि सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं। रेशमा जो बिहार से आई थीं ने कहा कि अब जो थोड़ा बहुत सम्मान उन्हें मिल रहा है वह कानूनों की वजह से है ना कि समाज द्वारा दिया जा रहा है। अपनी कविता प्रस्तुत करने वाली ट्रांसजेंडर कवयित्रियाँ थीं – देवज्योति भट्टाचार्जी, रानी मजुमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ।

. . . 2/–

आज भारत में प्रकाशन की स्थिति विषयक पर एक परिचर्चा का भी आयोजन किया गया, जिसका बीज वक्तव्य निदेशक, ग्लोबल एकेडेमिक पब्लिशिंग, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के सुगता घोष ने दिया। रमेश कुमार मित्तल, अशोक माहेश्वरी, बालेंदु शर्मा दाधीच, भास्कर दत्ता बरुआ, रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी कहना था कि प्रकाशन की स्थिति क्षेत्रीय भाषाओं में जरूरी चिंताजनक है लेकिन उसे परस्पर अनुवादों की संख्या बढ़ाकर नियंत्रित किया जा सकता है। सभी ने क्षेत्रीय भाषाओं के स्तरीय साहित्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें केवल क्षेत्रीय कहकर प्रकाशित ना किया जाना इन भाषाओं के समृद्ध साहित्य से पाठकों को वंचित करना है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गाँधी' के अंतिम दिन आज 4 सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें भारतीय काव्य, नाटकों पर गाँधी के प्रभाव, लोकप्रिय संस्कृति में गाँधी, गाँधी पर समकालीन साहित्यिक विमर्श एवं गाँधी पर प्रभावों की चर्चा की गई। इन सत्रों में अनीसुर रहमान, सुकांत चौधुरी, कमल किशोर गोयनका तथा इंद्रनाथ चौधुरी की अध्यक्षता में के.एस. राजेंद्रन, रत्नोत्तमा सेनगुप्ता, प्रणव खुल्लर, रामदास भटकल, भैरव लाल दास, मधुकर उपाध्याय, के.सी. बराल, शाहिद जमाल एवं वर्षा दास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

(के. श्रीनिवासराव)